पद १५

मजला। त्वरितचि भेटविले।।१।। जिवशिवपण हें द्वैताचि

कडसणी। ऐक्यांत आठविले।।२।। माणिक गुरुजीनीं ब्रह्मांड

अवघे। मजमाजी साठविले।।३।।

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)
गुरुजीनें बोलणें खुंटविले।।ध्रु.।। कोण मी पुसतांचि मजमाजी